मनसा सेवा - 95

अव्यक्त बापदादा :- (03/03/2007)

➳ _ ➳ बापदादा सेवा के निमित बने हुए बच्चों का उमंग-उत्साह देख करके भी खुश होते हैं लेकिन अभी कोई नवीनता हो। कोई स्वयं ही निमित बने और प्लैन देवे कि यह यह कर सकते हैं। क्योंकि वर्गीकरण की सेवा को भी काफी समय हो चुका है। हर एक वर्ग से ऐसे कोई स्पीकर तैयार हो, आप टापिक देते हो उस पर भाषण करते हैं, नहीं। खुद उमंग आवे मुझे यह करना है। ऐसा कुछ प्लैन बनाओ। उसका आधार है, स्वयं निमित्त बनने वाले सेकण्ड में वेस्ट को खत्म कर बेस्ट का प्रभाव वायुमण्डल में फैलायें।

➳ _ ➳ वेस्ट अभी भी है इसलिए मन्सा द्वारा सेवा का रेस्पाण्ड प्रैक्टिकल रूप में कम है। जैसे शुरू-शुरू में स्थापना के समय में देखा ब्रह्मा वाप का मन्सा वायवेशन कईयों को घर वैठे साक्षात्कार होने लगा, आवाज गया कोई आया है जाओ। ऐसे वेस्ट थॉट्स का वायुमण्डल नजदीक ला सकता है।

➳ _ ➳ कोई भी विस्तार में नहीं जाओ, शार्टी जो भी कारोबार की बातें करनी तो पड़ती हैं लेकिन जहाँ तक हो सके विस्तार से शार्ट करते मन्सा शक्तिशाली सेवा को बढ़ाओ) जैसे शिकारी जो होशियार होते हैं वह ऐसा तीर लगाते जो पंछी तीर सहित आके पाँव में पड़ता। यहाँ मन्सा सेवा ऐसी पावरफुल हो, जो आत्माओं को प्राप्ति की अनुभूतिहो, रह नहीं सके। मन्सा शक्तिशाली से मन्सा सेवा की सिद्धि प्राप्त होनी है। तो गुजरात वाले क्या करेंगे? मन्सा सेवा में नम्बर वन होके दिखाओ।

➢➢ बाबा के महावाक्य हैं...

➳_ ➳ तुमने मुझे नहीं चुना है मैंने तुम्हे चुना है..

→ तुम इस दुनिया के लिए नहीं हो, तुम मेरे लिए हो...

→ तुम्हारा इस दुनिया से कोई लेना देना नहीं है..

- ऐसे आत्माओं को घायल कर दो की कोई यहाँ से बाहर न जा सके...
- विकारो में फंसी आत्माओं को ऐसा तीर लग जाये कि
  - निकलकर आ जाए
  - ढूंढे ये तीर कहाँ से आया है...

➢➢ संसार विस्मृति की नींद में डूबा है..

➳_ ➳ खबर नहीं कि भगवान् आया है..

→ ऐसे संसार को हमें जगाना है...

➢➢ सेकंड में वेस्ट को ख़त्म करना है...

➳_ ➳ कमजोर संकल्प और संस्कार

➳_ ➳ व्यर्थ संकल्प और संस्कार ये सब लकडिया हैं...

→ जलाने के लिए तीन चीजे चाहिए...

- तीली
- माचिस
- मसाला लगा हुआ हो..
  - ▶ दृढ संकल्प की तीली हो... कि मुझे सभी व्यर्थ से मुक्त होना है...
  - ▶ बाप से सम्बन्ध की माचिस हो...
  - ▶ अभ्यास की निरंतर धरा हो...

➢➢ हमारा लक्ष्य महान व ऊँचा है...

➳_ ➳ हमें छोटी छोटी बातो में परेशान नहीं होना है...

➳_ ➳ एक बार में नहीं हुआ तो छोड़ नहीं देना है..

➳_ ➳ गिरना है फिर उठना है...

→ अध्यात्म के मार्ग पर उपर नीचे होगा ही...

→ ऐसे ऐसे संस्कार आयेंन्गे, जिनके बारे में पता ही नहीं था...

→ भक्ति में हर साल दशहरे पर रावण को जलाते हैं, पर हम रोज रोज जलाते हैं फिर वही खड़ा हो जाता है...

➳_ ➳ पर हमे हारना नहीं है...

➳_ ➳ इस मार्ग में थक नहीं जाना है...

➳_ ➳ मास्टर सर्व शक्तिवान के नशे में रहना है...

➢➢ भगवान कह रहे हैं वेस्ट अभी भी है...

➳_ ➳ कम कैसे बोला जाये?

→ धैर्यता

→ 40 सेकंड से ज्यादा एक बार में नहीं बोलना है...

→ Never speak to impress others.

→ Never speak in excitement.

- किसी बात का आवेग, उत्तेजना हो जाये... कि कब ये बात किसी को बताये...
- उस अवस्था में कुछ न बोले, चुप हो जाये...

→ अनावश्यक नहीं बोलना...

→ विस्तार नहीं करना, शोर्ट में बोलना...

→ बहुत ज्यादा वर्णन नहीं करना..

- उसमे शक्ति कम होति है मनसा की...
  - ▶ ज्ञान के अलावा और कुछ बताने की हमारी इच्छा न हो...

▶ यही इस जिव्हा, वाणी का सर्वश्रेष्ठ उपयोग है...

→ क्रोध उत्तेजना की ही अवस्था है...

■ क्रोध की अवस्था में विवेक नष्ट हो जाता है...

■ जजमेंट पावर बहुत कम हो जाती है..

■ उस समय काम **postpone**postponed कर देना...

➢➢ अध्यात्म में जो सर्वश्रेष्ठ अनुभव होते हैं.. उनको समा लेना है...

➳_ ➳ अध्यात्म में मंजिल बहुत आगे है..

→ छोटी छोटी चीजो में रुक नहीं जाना...

■ छोटे छोटे अनुभवों को सूना देंगे तो शक्ति कम हो जाएगी...

■ उन अनुभवों को और गहरा... और गहरा करते जाना है...

▶ अंतर्जगत की संपदा के आगे संसार की सारी संपदा, सारे धन गौण हैं...

➢➢ आत्माओं को अनुभूति करानी है..

➳_ ➳ आज संसार की आत्माओं की स्थिति ऐसी है... वे न जिन्दा हैं न मरे हैं... घसीट रहे हैं...

→ आत्माओं को ऐसा तीर लगाओ,

■ जो तीर और पंछी दोनों तुम्हारे चरणों में हो...

■ रह न सके...